हफ़्तावार रिसाला : 439
Weekly Booklet : 439

Qootul Quloob Se 59 Madani Phool (Qist-2) (Hindi)

क़ूतुल क़ुलूब

से 59 मदनी फूल (क़िस्त: 2)

(सफ़हात : 16)

जुमुआ के दिन की एक दुआ 05
सिद्दीक़ीन के मर्तबे का हुसूल 11
ख़ामोश रहने की अहमिय्यत 12
दुनियावी रग़बत का ज़रीआ 14

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

“क़ूतुल क़ुलूब” से 59 मदनी फूल (क़िस्त : 2)[1]

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 16 सफ़्हात का रिसाला “क़ूतुल क़ुलूब से 59 मदनी फूल (क़िस्त : 2)” पढ़ या सुन ले उसे अपनी फ़रमां बरदारी वाली नेकियों भरी ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा और वोह ईमान पर फ़ौत हो कर जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िल हो जाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक बार किसी भिकारी ने ग़ैर मुस्लिम से सुवाल किया, उन्हों ने मज़ाक़न अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते मौला मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे। उस ने ह़ाज़िर हो कर सुवाल के लिये हाथ फैलाया, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने 10 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर उस की हथेली पर दम कर दिया और फ़रमाया : मुठ्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर खोल दो। (ग़ैर मुस्लिम हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है !) मगर जब साइल ने उन के सामने जा कर मुठ्ठी खोली तो उस में एक दीनार था ! येह करामत देख कर कई ग़ैर मुस्लिम मुसलमान हो गए। (राह़तुल क़ुलूब, स. 142)

विर्द जिस ने किया दुरूद शरीफ़ और दिल से पढ़ा दुरूद शरीफ़
ह़ाजतें सब रवा हुईं उस की है अ़जब कीमिया दुरूद शरीफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

---

1 ...येह रिसाला अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की किताब “क़ूतुल क़ुलूब जिल्द अव्वल (उर्दू)” से तय्यार किया गया है।

﴾1﴿ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ दिन के वक़्त नमाज़ पढ़ने में रुकूअ़ व सुजूद की कसरत पसन्द करते और रात की नमाज़ में लम्बा क़ियाम करना पसन्द करते।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 236)

शैत़ान के कारनामे

﴾2﴿ शैत़ान के पास एक सऊ़त़ (सुंघाने वाली कोई चीज़) एक लऊ़क़ (चटाने वाली कोई चीज़) और एक ज़रूर (छिड़कने वाली कोई चीज़) है जब वोह बन्दे को सुंघाता है तो उस के अख़्लाक़ बुरे हो जाते हैं, जब चटाता है तो उस की ज़बान बुराई व शर से आलूदा हो जाती है और जब कुछ छिड़कता है तो बन्दा रात भर सोया रहता है यहां तक कि सुब्ह़ हो जाती है। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 90। क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1 / 237)

﴾3﴿ जो चाहे मांग, मैं तुझे अ़त़ा करूंगा

بِسْمِ اللّٰہِ، مَا شَآءَ اللّٰہُ، وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ، مَا شَآءَ اللّٰہُ، کُلُّ نِعْمَۃٍ مِّنَ اللّٰہِ، مَا شَآءَ اللّٰہُ، اَلْخَیْرُ کُلُّہٗ بِیَدِ اللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ، مَا شَآءَ اللّٰہُ، لَا یُصْرِفُ السُّوْٓءَ اِلَّا اللّٰہُ

तर्जमा : अल्लाह पाक के नामे मुबारक से, अल्लाह पाक जो चाहे, अल्लाह पाक के बग़ैर नेकी करने की क़ुव्वत नहीं, अल्लाह पाक जो चाहे, हर नेमत अल्लाह पाक ही की जानिब से है, अल्लाह पाक जो चाहे, हर क़िस्म की ख़ैर व भलाई अल्लाह पाक के क़ब्ज़ए क़ुदरत में है, अल्लाह पाक जो चाहे, अल्लाह पाक के सिवा कोई भी बुराई दूर नहीं कर सकता।

जो कोई हमेशा बेदार होते और सोते वक़्त येह कलिमात पढ़ता है अल्लाह पाक की ह़िफ़ाज़त में होता है और शैत़ान से मह़फ़ूज़ रहता है चुनान्चे ह़दीसे पाक में है : जो कोई येह कलिमात अ़रफ़े के दिन 100 मरतबा सूरज ग़ुरूब होने से पहले पढ़े अल्लाह पाक उसे अ़र्श से निदा देता है : तू ने मुझे राज़ी कर दिया है और मेरे ज़िम्मए करम पर तेरी रिज़ा है मुझ से जो चाहे मांग, मैं तुझे अ़त़ा करूंगा।

(क़ुतूल क़ुलूब (उर्दू), 1 / 244)

﴾4﴿ अज़ान और इक़ामत के दरमियानी लम्हात को ग़नीमत जानें कि येह दुआ का बेहतरीन वक़्त है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/246)

﴾5﴿ बड़ी नेमत

तमाम मुसलमानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने एक साइल को अंगूर का एक दाना दिया, रावी फ़रमाते हैं हम एक दूसरे की जानिब देखने लगे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने इरशाद फ़रमाया तुम्हें क्यूं तअ़ज्जुब हो रहा है ? इस में बहुत से ज़र्रात हैं। (क़ुतूल क़ुलूब (उर्दू), 1/249) ह़दीसे पाक में है : مَنْ تَصَدَّقَ بِعَدْلِ تَمْرَةٍ مِّنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ وَلَا يَقْبَلُ اللهُ اِلَّا الطَّيِّبَ وَ اِنَّ اللهَ يَتَقَبَّلُهَا بِيَمِيْنِهٖ ثُمَّ يُرَبِّيْهَا لِصَاحِبِهٖ كَمَا يُرَبِّيْ اَحَدُكُمْ فُلُوَّهٗ حَتّٰى تَكُوْنَ مِثْلَ الْجَبَلِ यानी जिस ने पाकीज़ा कमाई से खजूर के बराबर सदक़ा किया और अल्लाह पाक सिर्फ़ पाकीज़ा चीज़ को क़बूल करता है और बेशक अल्लाह पाक उस को अपने दाएं हाथ[1] से क़बूल करता है फिर उस सदक़ा करने वाले के लिये उस को बढ़ाता रहता है जैसा कि कोई शख़्स तुम में से अपने घोड़े के बच्चे को पालता है ह़त्ता के उस का वोह सदक़ा पहाड़ के बराबर हो जाता है। (بخاری،1/476،حدیث:1410)

﴾6﴿ अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सई़द बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं जिस ने पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त पढ़ीं तो उस ने दो ज़मीनें और दो समुन्दर इ़बादत से भर दिये। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/250)

﴾7﴿ अ़क़्ल येह है कि---

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : अल्लाह पाक की जानिब से ह़ासिल होने वाली अ़क़्ल येह है कि उस के अम्र व नही (जिन के करने

1... याद रहे ! ह़दीसे पाक में मज़कूर “दाएं हाथ” से जिस्म वाला दायां हाथ मुराद नहीं बल्कि येह मुतशाबिहात में से है जिस का माना वोही है जो अल्लाह पाक की शायाने शान है।
(सिरातुल जिनान, पा 11, अत्तौबा, तह़तल आयह : 104, 4/232)

का हुक्म दिया और जिन से मना फ़रमाया) मालूम हो जाएं।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 258 -تاریخ ابن عساکر، 18/450، رقم:2245)

﴾8﴿ क़ब्र में नमाज़ जैसी कैफ़िय्यत होगी

मन्क़ूल है कि बन्दे की क़ब्र में वैसी ही इत्मीनान व सुकून वाली कैफ़िय्यत व हालत होगी जो उस की नमाज़ में हुवा करती थी और वोह अपनी इस आराम गाह में वैसी ही राहत पाएगा जैसी हालते नमाज़ में पाया करता था।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 261)

﴾9﴿ बाज़ बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِمْ जब कोई सूरत तिलावत फ़रमाते और उन का दिल इस में मश्ग़ूल न होता (यानी तवज्जोह न होती) तो वोह दोबारा उस सूरत को दोहराया करते। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 263)

﴾10﴿ अल्लाह करीम और क़ुरआने करीम

एक बार नमाज़ पढ़ते हुए अज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते इमाम जाफ़र बिन मुहम्मद सादिक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की कैफ़िय्यत अजीब हो गई यहां तक कि बेहोश हो गए इफ़ाक़े के बाद उन से इस का सबब दरयाफ़्त किया गया तो इरशाद फ़रमाया : मैं बार बार एक ही आयते मुबारका पढ़ रहा था कि अचानक मैं ने वोही आयते मुबारका मुतकल्लिम (यानी अल्लाह पाक) से सुनी तो अल्लाह पाक की क़ुदरत व हैबत के सामने मेरा जिस्म अपनी जगह क़ाइम न रह सका। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 267)

﴾11﴿ तिलावते क़ुरआन करने वाले के लिये आदाब

क़ुरआने करीम की तिलावत करने वाले को चाहिये कि डरता रहे, जब ऐसी आयाते मुबारका तिलावत करे जिन में वादा, मद्ह, उम्दा औसाफ़ और मुक़र्रबीन के दरजात का ज़िक्र हो तो ख़ुद को इस मक़ाम पर फ़ाइज़ तसव्वुर न करे, न ही ख़ुद को इस क़ाबिल ख़याल करे बल्कि दूसरे मोमिनीन को इस मक़ाम व मरतबा

पर देखे और जब ऐसी आयात की तिलावत करे जिन में लोगों पर नाराज़ी का इज़्हार हो, उन की मज़्मूम सिफ़ात का तज़्किरा हो और ग़ाफ़िलीन के मक़ामात और गुनाहगारों के ह़ालात बयान किये गए हों तो ख़ुद को इस मक़ाम पर समझे और जाने कि वोही इन आयाते मुबारका का मुख़ात़ब है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/275 मुल्तक़त़न)

﴾12﴿ हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : लोगों में सब से अच्छी आवाज़ से क़ुरआने करीम पढ़ने वाला वोह है कि जब पढ़े तो तुम देखो कि वोह अल्लाह पाक से डर रहा है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/278 –ابن ماجہ، 2/130، حدیث:1339)

﴾13﴿ सज्दए तिलावत में येह दुआ़ कीजिये : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِى مِنَ الْبَاكِيْنَ اِلَيْكَ الْخَاشِعِيْنَ لَكَ۔ (तर्जमा : ऐ अल्लाह पाक ! मुझे अपनी बारगाह में रोने वालों और डरने वालों में से बना दे।) (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/279)

﴾14﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ की गई कि आप ख़त्मे क़ुरआने करीम के वक़्त क्या दुआ़ करते हैं ? तो आप ने फ़रमाया : “मैं किस चीज़ की दुआ़ करूं ? मैं तो अपनी तिलावत (की कोताहियों) से 100 मरतबा इस्तिग़फ़ार करता हूं।” (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/294)

﴾15﴿ क़ुरआने करीम की एक मन्ज़िल रोज़ाना पढ़ना बहुत बेहतर है और येह सुन्नत भी है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/257)

﴾16﴿ जुमुआ़ के दिन की एक दुआ़

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ وَاَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِيْنَ

तर्जमा : ऐ मेरे परवरदिगार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे बख़्शा दे और मुझ पर रह़म फ़रमा, मेरा हर वोह गुनाह जो तेरे इ़ल्म में है उस से दरगुज़र फ़रमा और तू ही सब से बेहतर रह़म फ़रमाने वाला है : (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/333 –جامع الاصول، 6/170، حدیث:4268)

﴾17﴿ अमानत की ह़िफ़ाज़त

अमानत की ह़िफ़ाज़त येह है कि उसे छुपाया जाए अगर बिला ज़रूरत उसे ज़ाहिर किया जाए तो येह ख़ियानत होगी क्यूंकि अमानत रखवाने वाला येह पसन्द नहीं करता कि उस की अमानत ज़ाहिर कर दी जाए और किसी छुपी चीज़ की ह़क़ीक़ी ह़िफ़ाज़त येह है कि उसे (कहीं रख कर) भुला दिया जाए और उस का ज़ाएअ़ होना येह है कि उस की ह़िफ़ाज़त की जगहें बकसरत हों। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/369)

﴾18﴿ रोज़ादार को (गाली गलोच के जवाब में) येह कहना जाइज़ है कि “मैं रोज़ादार हूं।” (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/369)

अच्छी बातें

﴾19﴿ अजनबी वोह है जिस का कोई दोस्त न हो। ﴾20﴿ बदगुमानी दोस्त से दूर कर देती है।

﴾21﴿ किसी की इ़ज़्ज़त करना बेहतरीन आ़दत है। ﴾22﴿ ह़या हर अच्छे व नेक काम का सबब है।

﴾23﴿ सब से मज़बूत सबब जिस से तुम अपने नफ़्स पर क़ाबू पा सको वोह तअ़ल्लुक़ है जो तुम्हारे और अल्लाह पाक के दरमियान है।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 375 मुल्तक़त़न)

﴾24﴿ जो किसी मश्कूक चीज़ (यानी जिस के ह़लाल व ह़राम या जाइज़ व नाजाइज़ होने में शक हो उस) से न रुके तो उस ने ख़ुद को नफ़्स की ख़्वाहिश का फ़रमां बरदार कर दिया। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/385)

﴾25﴿ अल्लाह पाक कोई भी अ़मल बग़ैर उस के सह़ीह़ त़रीक़े के क़बूल नहीं करता और उस का सह़ीह़ त़रीक़ा येही है कि उस का इ़ल्म ह़ासिल किया जाए।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1 / 396)

﴾26﴿ अल्लाह पाक क़ियामत के दिन फ़रमाएगा

अल्लाह पाक क़ियामत के दिन फ़रमाएगा : बन्दा तो तू मेरा था लेकिन दोस्त मेरे इ़लावा दूसरों को बनाता रहा, रिज़्क़ मेरा खाता रहा मगर अ़मल दूसरों की रिज़ा के लिये करता रहा। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/397)

﴾27﴿ आमाल में मिलावट ना मक़्बूल

अगर दूध में गोबर और ख़ून में से कुछ मिल जाए तो दूध जैसी नेमत हमें ह़ासिल न होगी इसी त़रह़ हमारे अ़मल को ख़्वाहिश से पाको साफ़ होना चाहिये ताकि हम अपने वाजिबात व हुक़ूक़ अदा कर के अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़ हो सकें। चुनान्चे दूध जैसी नेमत में अगर हम गोबर या ख़ून देख लें तो हम उसे छोड़ देते हैं और उसे इस्तिमाल नहीं करते, इसी त़रह़ ह़कीम व ख़बीर रब हमारे अ़मल में जब रियाकारी वग़ैरा की मिलावट पाता है तो उसे हमारी जानिब लौटा देता है और क़बूल नहीं फ़रमाता। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/398)

﴾28﴿ कोई भी इ़बादत ख़्वाहिशे नफ़्सानिया से बचे बग़ैर कामिल नहीं हो सकती। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 404)

﴾29﴿ रात के क़ियाम पर इस्तिक़ामत (यानी पाबन्दी) इख़्तियार करना सब से सख़्त अ़मल है और औराद को पाबन्दी से अदा करना मोमिनीन का वस्फ़ और आ़बिदीन (यानी इ़बादत गुज़ारों) का त़रीक़ा है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/412)

﴾30﴿ अल्लाह पाक जिस शख़्स को इ़बादत का आ़दी बना दे और फिर वोह शख़्स सुस्ती की बिना पर उसे तर्क कर दे तो अल्लाह पाक उस पर नाराज़ हो जाता है।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1 / 413 – اتحاف السادۃ المتقین، 3/763)

﴾31﴿ वक़्त की अहमिय्यत

जिस ने आज के दिन, गुज़रे हुए कल के मुक़ाबले में अल्लाह पाक की

ज़ियादा नाफ़रमानियां कीं तो वोह मह़रूम है और जो आज अपने गुज़रे हुए कल से नेकियों में इज़ाफ़ा न करे तो वोह भी नुक़्सान में है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/413)

﴾32﴿ किसी आ़रिफ़ (अल्लाह पाक की पहचान रखने वाले वलियुल्लाह) से मन्क़ूल है "मुझे आग में दाख़िल कर के आज़माया जाए येह मुझे मासियत (यानी गुनाह) में मुब्तला कर के आज़माए जाने से ज़ियादा पसन्द है।" (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/415)

﴾33﴿ बाज़ उ़लमाए किराम ने नफ़्स के लालच को उस मख्खी की मिस्ल क़रार दिया है जो शहद लगी हुई रोटी के पास से गुज़रे और सारा शहद ह़ासिल करने की ख़ातिर उस में गिर जाए और उस के पर शहद से चिपक जाएं जिस के सबब वोह मर जाए। जब कि एक दूसरी मख्खी उसी रोटी के पास से गुज़रे तो शहद के थोड़ा सा क़रीब जाए, अपनी ज़रूरत पूरी करे और सह़ीह़ सलामत ह़ालत में पीछे हट जाए।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/418)

﴾34﴿ नफ़्स का मालिक बनने और नफ़्स पर ग़लबा पाने का त़रीक़ा

शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَۃُ اللهِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जो बन्दा अपने नफ़्स का मालिक बनना चाहता है तो उस के लिये नफ़्स को क़ाबू मे दे दिया जाता है और बिल आख़िर वोह इस पर ग़ालिब आ जाता है लिहाज़ा अगर अपने नफ़्स का मालिक बनना चाहते हैं तो पहले इस पर सख़्ती करें अगर इस त़रह़ आप ने उस पर ग़लबा ह़ासिल करने की कोशिश की तो यक़ीनन उस पर ग़ालिब आ जाएंगे और अगर उस पर सख़्ती न की तो वोह आप पर ग़ालिब आ जाएगा, उस का हर त़रफ़ से मुह़ासबा करें क्यूंकि अगर आप ने उसे न रोका तो येह आप को भी अपने साथ ही बहा ले जाएगा।

नफ़्स पर क़ाबू पाने का सब से पहला मरह़ला येह है कि हर लम्ह़ा उस की कड़ी निगरानी करें और दिल में पैदा होने वाले हर ख़याल पर अ़मल करने के बजाए

पहले कुछ ठहरें और सोचें कि अगर येह ख़याल अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये हो तो फ़ौरन अ़मल कर गुज़रें और अगर वोह ख़याल अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये न हो तो फ़ौरन उसे दिल से निकाल दें ताकि वोह पक्का न होने पाए।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 422)

﴾35﴿ मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि हर वोह दिन जिस में अल्लाह पाक की ना फ़रमानी न की जाए वोह हमारे लिये ईद का दिन है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1 / 423)

﴾36﴿ नाराज़ी की अ़लामत

उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : अल्लाह पाक की नाराज़ी की अ़लामत येह है कि बन्दा दूसरों के उ़यूब बयान करता रहे और अपने उ़यूब को भूल जाए और गुमान रखे कि अल्लाह पाक लोगों पर नाराज़ है और येह यक़ीन रखे कि अल्लाह पाक उस से मह़ब्बत करने वाला है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 426)

﴾37﴿ लगातार गुनाहों में मुब्तला रहने के अस्बाब येह उमूर हैं : तर्के मुह़ासबा (यानी अपने आमाल का जाइज़ा न लेना), तौबा में ताख़ीर, इस्तिक़ामत में टाल मटोल और अल्लाह पाक की बारगाह में तौबा व इस्तिग़फ़ार न करना।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1 / 427)

﴾38﴿ गुनाहों की ह़द

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि अल्लाह पाक और बन्दे के दरमियान गुनाहों के सामने एक ह़द मुक़र्रर कर दी गई है चुनान्चे बन्दा जब उस ह़द तक पहुंचता है तो उस के दिल पर मोहर लगा दी जाती है और फिर कभी भी उसे ख़ैर व भलाई की तौफ़ीक़ नहीं दी जाती। पस ऐ ह़ुदूद से तजावुज़ कर जाने वाले इन्सान !

तौबा में जल्दी कर और इस ह़द तक पहुंचने से पहले पहले फ़ौरन वापस लौट आ, वरना थकावट और मशक़्क़त का सामना करना पड़ेगा। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/429)

﴾39﴿ बन्दा किसी भी लम्ह़ा ख़्वाह वोह मुख़्तसर ही हो दो ह़ालतों से ख़ाली नहीं हो सकता, यानी या तो मक़ामे नेमत में होगा या फिर मक़ाम मुसीबत में। पस मक़ाम नेमत में बन्दे पर शुक्र करना और आज़माइश के मौक़अ़ पर सब्र करना लाज़िम है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 435)

﴾40﴿ वक़्त की तक़्सीम

आक़िल पर लाज़िम है कि अपने औक़ात चार ह़िस्सों में तक़्सीम कर ले : ﴾1﴿ एक साअ़त में अपने रब से मुनाजात करे। ﴾2﴿ एक साअ़त में अपने नफ़्स का मुह़ासबा करे। ﴾3﴿ एक साअ़त को अल्लाह पाक की पैदा कर्दा काइनात में ग़ौरो फ़िक्र के लिये ख़ास कर दे। ﴾4﴿ एक साअ़त को खाने पीने जैसी ज़रूरिय्यात के लिये ख़ाली रखे क्यूंकि इसी साअ़त में उसे बाक़ी औक़ात में उमूर सर अन्जाम देने के लिये मदद ह़ासिल होगी। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/437)

﴾41﴿ दुनिया में फ़िक्रे आख़िरत

दुनियावी मुशाहदे के चार मक़ामात हैं और हर बन्दा अपने ह़ाल के लिह़ाज़ से अपने मक़ामो मरतबे के मुताबिक़ इस का मुशाहदा करता है : बाज़ इब्रत व बसीरत की निगाह से दुनिया देखते हैं येह उलुल अल्बाब (यानी अ़क़्ल वाले) हैं जिन के क़ुलूब से ह़िजाब उठा दिये जाते हैं और येही वोह लोग हैं जो हाथ और आंखें रखने वाले और मक़ामे इब्रत पर फ़ाइज़ हैं। येह मक़ाम उन उ़लमाए किराम का है जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वारिस हैं। बाज़ दुनिया और दुनिया वालों को रह़मत व ह़िक्मत की निगाह से देखते हैं, येह डरने वालों का मक़ाम है। बाज़

शहवत व रश्क की आंख से देखते हैं, येह हलाक होने वालों का मक़ाम है और इस से मुराद वोह दुनियादार लोग हैं जो सिर्फ़ दुनिया कमाने की जुस्तजू में मगन रहते हैं और इस के न मिलने पर ह़सरत का शिकार हो जाते हैं। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/437)

﴾42﴿ सिद्दीक़ीन के मर्तबे का ह़ुसूल

ह़ज़रते अबू मुह़म्मद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि बन्दा सिद्दीक़ीन (औलियाए किराम के सब से आला मक़ाम) के मर्तबे तक ह़क़ीक़त में उस वक़्त तक नहीं पहुंच सकता जब तक कि उस में येह चार चीज़ें न पाई जाएं : (1) सुन्नत के मुत़ाबिक़ फ़राइज़ की अदाएगी, (2) परहेज़गारी व तक़्वा के एतिबार से ह़लाल खाना, (3) ज़ाहिरो बात़िन में मना किये हुए कामों से बचना और (4) मरने तक इसी ह़ालत पर सब्रो इस्तिक़ामत से क़ाइम रहना। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/442)

﴾43﴿ अ़मल की कोई इन्तिहा नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाया करते थे कि अल्लाह पाक की क़सम ! मौत के इ़लावा बन्दे के किसी अ़मल की कोई इन्तिहा नहीं और अल्लाह पाक की क़सम ! मोमिन वोह नहीं जो सिर्फ़ कोई अ़मल महीना व दो महीने या साल व दो साल तक करे बल्कि मोमिन तो हमेशा अल्लाह पाक के हुक्म पर क़ाइम रहता है और अल्लाह पाक की ख़ुफ़िया तदबीर (यानी छुपे फ़ैसले) से डरता रहता है।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 442)

﴾44﴿ कंकर के ज़रीए़ ख़ामोश रहना सीखा

बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم में से एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं ने एक कंकर के ज़रीए़ ख़ामोश रहना सीखा, जिसे मैं ने अपने मुंह में 30 साल तक डाले रखा जब भी कोई बात करने का इरादा करता तो उस से मेरी ज़बान में लुक्नत आ जाती और मैं ख़ामोश हो जाता। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/461)

﴾45﴿ फ़ुज़ूल बात के बदले दो रकअ़त नमाज़

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने नफ़्स से अ़हद किया कि मेरे मुंह से जो भी ला यानी (यानी फ़ुज़ूल) बात निकलेगी मैं उस के बदले दो रकअ़त नमाज़ अदा करूंगा, लेकिन येह काम मुझ पर आसान रहा, फिर मैं ने ख़ुद पर हर कलिमे के बदले एक रोज़ा रखना लाज़िम ठहरा लिया, येह भी मुझे आसान मालूम हुवा लेकिन मैं रुका नहीं यहां तक कि मैं ने अपने नफ़्स पर हर कलिमे के इ़वज़ एक दिरहम सदक़ा करना लाज़िम कर लिया तो येह काम नफ़्स पर मुश्किल बन गया और आख़िरेकार में ला यानी (यानी फ़ुज़ूल) बात करने से रुक ही गया। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/461)

﴾46﴿ एक आ़रिफ़ का क़ौल है कि इ़ल्म की दो क़िस्में कर दी गई हैं : निस्फ़ इ़ल्म ख़ामोश रहना है और निस्फ़ इ़ल्म इस बात का जानना है कि इस इ़ल्म को कहां रखा (यानी बयान किया) जाए। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/464)

﴾47﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना आमश رَحْمَةُ اللهِ عَلَيه फ़रमाया करते कि बाज़ बातें ऐसी होती हैं जिन का जवाब ख़ामोशी ही है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/465)

﴾48﴿ ला अद्री बोलें अद्री नहीं

उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : येह जुम्ला सीख लें : ला अद्री (यानी मैं नहीं जानता) और येह जुम्ला हरगिज़ न सीखें : अद्री (यानी मैं जानता हूं), अगर आप ने ला अद्री (यानी मैं नहीं जानता) कहा तो लोग आप को सिखाएंगे यहां तक कि आप जानने लगेंगे और अगर आप ने अद्री कहा तो वोह आप से सुवाल करेंगे यहां तक कि आप इस सुवाल का जवाब न जानते होंगे। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/466)

﴾49﴿ ख़ामोश रहने की अहमिय्यत

मन्क़ूल है कि जिस त़रह़ कलाम करना सीखते हो इसी त़रह़ ख़ामोश रहना भी सीखा करो क्यूंकि अगर कलाम तुम्हारी रहनुमाई करेगा तो ख़ामोशी तुम्हें

बचाएगी चुनान्चे ख़ामोश रहने से दो बातें हासिल होती हैं। ﴾1﴿ ख़ामोशी से उस शख़्स की जहालत दूर कर सकते हो जो तुम से भी बड़ा जाहिल हो ﴾2﴿ और ख़ामोशी के ज़रीए उस शख़्स से इल्म हासिल कर सकते हो जो तुम से भी बड़ा आलिम हो। (वज़ाहत : यानी आप ख़ामोश रहें और उन को बोलने देंगे तो इस से भी आप के इल्म में इज़ाफ़ा होगा।) (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/466)

﴾50﴿ गुफ़्तगू में तक़्वा

बाज़ औक़ात मुफ़ीद गुफ़्तगू करने वाला भी बे मौक़अ गुफ़्तगू करने की वज्ह से शर्मसार हो जाता है। उलमाए किराम फ़रमाते हैं कि बन्दे का तक़्वा उस की गुफ़्तगू में नज़र आता है। जब कलाम कम होता है तो दुरुस्ती ज़ियादा हो जाती है और कई बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم से मरवी है कि सलामती के दस हिस्सों में से नौ हिस्से ख़ामोशी में हैं। (कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/467 मुल्तक़तन)

﴾51﴿ तीन क़िस्म के आमाल नामे

मन्क़ूल है कि मुंह से निकली हुई हर बात के लिये तीन क़िस्म के आमाल नामे खोले जाएंगे : ﴾1﴿ पहला आमाल नामा होगा येह बात क्यूं की ? ﴾2﴿ दूसरा होगा कि उस पर अमल कैसे किया और ﴾3﴿ तीसरा होगा कि येह बात किस के लिये कही ? अगर वोह उन तीनों आमाल नामों के सुवालात से नजात पा गया तो दुरुस्त, वरना हिसाबो किताब की ख़ातिर उस का ठहरना तवील हो जाएगा।

(कूतुल कुलूब (उर्दू), 1/468)

﴾52﴿ मोमिन व मुनाफ़िक़ की ज़बान

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मोमिन की ज़बान उस के दिल के पीछे होती है, जब भी वोह कोई बात करने का इरादा करता है तो सोचता है अगर उस के हक़ में हो तो बोलता है और अगर मुख़ालिफ़ हो तो रुक

जाता है जब कि मुनाफ़िक़ का दिल उस की ज़बान के किनारे पर होता है, यानी दिल में जो ख़याल पैदा होता है बोल देता है, लम्हा भर तवक़्क़ुफ़ नहीं करता बल्कि इस बात से वापस भी नहीं पलटता। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/468)

﴾53﴿ फ़ुज़ूल बातों से रुकने वाले के लिये ख़ुश ख़बरी

कलाम में बनावटी बनाव सिंघार और ज़ियादती होती है जब कि ख़ामोशी में सलामती और ग़नीमत है। चुनान्चे हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मवाइज़े हसना में है : “उस शख़्स के लिये ख़ुश ख़बरी है जिसे उस का ऐब लोगों के उयूब से ग़ाफ़िल कर दे और वोह अपने फ़ाल्तू माल को ख़र्च कर दे और फ़ुज़ूल बातों से रुका रहे।”

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/469) – (الفردوس بماثور الخطاب، 2/447، حدیث:3929)

﴾54﴿ ख़ल्वत की अहमिय्यत व फ़ज़ीलत

ख़ल्वत (यानी तन्हाई में रहना) नफ़्स की दुनियावी लज़्ज़तों में सोचने समझने की सलाहिय्यतों को कम कर देती है क्यूंकि नफ़्स का आंखों के ज़रीए दुनिया का मुशाहदा करना ख़त्म हो जाता है। इस लिये कि आंख दिल का दरवाज़ा है जिस से आफ़ात दाख़िल होती हैं और यहीं शहवतें और लज़्ज़तें पाई जाती हैं, ख़ल्वत फ़िक्रे आख़िरत पैदा करती है। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/469)

﴾55﴿ दुनियावी रग़बत का ज़रीआ

पेट भर कर खाना दुनियावी रग़बत का ज़रीआ है चुनान्चे बाज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मन्क़ूल है कि शहंशाहे ख़ुश ख़िसाल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बाद सब से पहली बिदअ़त पेट भर कर खाना खाने की पैदा हुई क्यूंकि जब लोगों के पेट भर जाते हैं तो उन की शहवतें भी बे लगाम हो जाती हैं। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/471)

《56》 मुसलमानों की प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से मरवी है कि रसूले बे मिसाल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان बग़ैर किसी मजबूरी के यानी अपने इख़्तियार व मर्ज़ी से भूके रहते थे।

(क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 471)

《57》 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि “जब से अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ عَنْہُ को शहीद किया गया है मैं ने पेट भर कर खाना नहीं खाया।” (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/471)

《58》 अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ फ़रमाया करते : “अल्लाह पाक की क़सम ! मैं ने ऐसे लोगों को भी पाया जो शिकम सैर हो कर नहीं खाते थे बल्कि उन में से अगर कोई कुछ खाता भी तो सिर्फ़ इस क़दर कि जब जान में जान आती तो फ़ौरन खाने से रुक जाता। मज़ीद फ़रमाते हैं कि मोमिन कभी पेट भर कर नहीं खाता बल्कि उस की वसिय्यत हमेशा उस के पहलू तले रहती है। (यानी वोह मौत को याद करते रहते हैं)” (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1 / 472)

《59》 ह़ज़रते सुफ़्यान सौरी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ से मरवी है कि दो बातें क़सावते क़ल्बी (यानी दिल की सख़्ती) का बाइ़स हैं : बहुत ज़ियादा पेट भर कर खाना और बहुत ज़ियादा बातें करना। (क़ूतुल क़ुलूब (उर्दू), 1/ 473)

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़्हा	उ़न्वान	सफ़्हा
शैत़ान के कारनामे	02	गुनाहों की ह़द	09
जो चाहे मांग, मैं तुझे अ़त़ा करूंगा	02	वक़्त की तक़्सीम	10
बड़ी नेमत	03	दुनिया में फ़िक्रे आख़िरत	10
अ़क़्ल येह है कि ---	03	सिद्दीक़ीन के मरतबे का ह़ुसूल	11
क़ब्र में नमाज़ जैसी कैफ़िय्यत होगी	04	अ़मल की कोई इन्तिहा नहीं	11
अल्लाह करीम और क़ुरआने करीम	04	कंकर के ज़रीए ख़ामोश रहना सीखा	11
तिलावते क़ुरआन करने वाले के लिये आदाब	04	फ़ुज़ूल बात के बदले दो रकअ़त नमाज़	12
जुमुअ़ा के दिन की एक दुआ	05	ला अद्री बोलें अद्री नहीं	12
अमानत की ह़िफ़ाज़त	06	ख़ामोश रहने की अहमिय्यत	12
अच्छी बातें	06	गुफ़्तगू में तक़्वा	13
अल्लाह पाक क़ियामत के दिन फ़रमाएगा	07	तीन क़िस्म के आमाल नामे	13
आमाल में मिलावट ना मक़्बूल	07	मोमिन व मुनाफ़िक़ की ज़बान	13
वक़्त की अहमिय्यत	07	ख़ल्वत की अहमिय्यत व फ़ज़ीलत	14
नाराज़ी की अ़लामत	09	दुनियावी रग़बत का ज़रीआ	14

अगले हफ़्ते का रिसाला

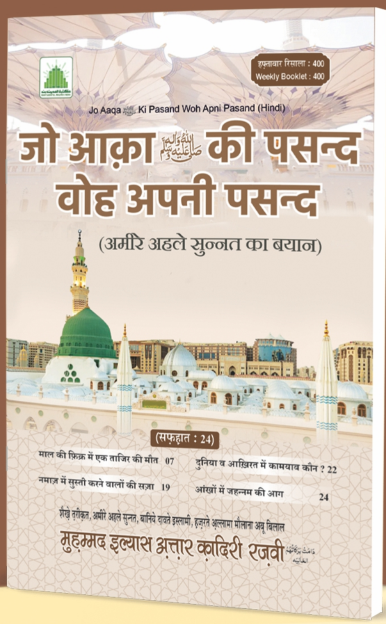

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025